पाठ 17. मधुमक्खी तथा कबूतर

इस कहानी के माध्यम से बच्चों में न केवल एक-दूसरे की बल्कि अजनबी लोगों की भी सहायता करने का भाव जागृत होगा। उन्हें कबूतर के कार्य से सूझ-बूझ से काम लेना आएगा। कहानी पढ़ने से बच्चों के वाचन-कौशल का विकास होगा।

पाठ की भूमिका

हमें सदैव सबकी सहायता करने के लिए तैयार रहना चाहिए। कबूतर ने जिस प्रकार निस्स्वार्थ भाव से मधुमक्खी की जान बचाई, उसकी उसी सहायता ने एक दिन उसके अपने प्राण बचाने के लिए मधुमक्खी को प्रेरित किया।

पाठ का परिचय

मधुमक्खियों के दल ने नदी किनारे एक पेड़ पर अपना छत्ता लगा लिया। एक दिन पानी पीने के लिए गई एक मधुमक्खी गलती से पानी में गिर गई। इससे पहले कि वह डूब जाती, पेड़ पर बैठे एक कबूतर ने उसे देख लिया। मधुमक्खी की जान बचाने के लिए कबूतर ने अपनी बुद्धि का इस्तेमाल किया तथा तुरंत एक पत्ता तोड़कर मधुमक्खी के पास पानी में फेंक दिया। मधुमक्खी पत्ते पर चढ़ गई और पंख सूखने पर उड़ गई। इस प्रकार उसकी जान बच गई।
एक दिन कबूतर एक पेड़ की एक डाल पर बैठा था। तभी एक शिकारी आया और कबूतर पर निशाना साधने लगा, कबूतर ने उड़ने की सोची तो ऊपर एक बाज़ को अपनी ताक में मँडराते पाया। कबूतर के प्राण सूख गए। मधुमक्खी यह सब देख रही थी। उसने शिकारी के हाथ में डंक मारा तो निशाना गलत लगा और कबूतर की जान बच गई। बाज़ भी शिकारी के तीर से डरकर भाग गया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

नेकी का फल सदा नेक होता है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पहले स्वयं पूरी कहानी का आदर्श वाचन करें। बच्चों से एक-एक परिच्छेद का सस्वर वाचन करवाएँ। सस्वर वाचन करते हुए अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध कर दो-दो बार बुलवाएँ। बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने हिस्से का परिच्छेद पढ़कर अपने साथियों से उसके बारे में प्रश्न पूछें। जैसे – मधुमक्खी कहाँ रहती थी? कबूतर की जान को कैसे खतरा था? कबूतर को उसकी नेकी का फल कैसे मिला आदि।

महत्वपूर्ण चर्चा

कहानी के संबंध में बच्चों से चर्चा करें। दूसरों की सहायता करने में एक अद्भुत आनंद का अनुभव होता है। मधुमक्खी तथा कबूतर ने कैसे एक-दूसरे की जान बचाई, क्या तुम्हारी नज़रों में यह करना मुश्किल काम है? तुम्हारे सामने यदि ऐसी कोई परिस्थिति आई तो तुम क्या करोगे? प्रत्येक बच्चे को अपने विचारों को पूरी कक्षा के सामने आकर व्यक्त करने को कहें। परोपकार की कोई सच्ची घटना बच्चों को सुनाएँ।